बीज बोने से पहले की मिट्टी

श्रद्धा वह बोती है, जिसे कोई अन्य शक्ति नहीं बो सकती

दाजी

पूज्यश्री चारीजी महाराज

के 99वें जन्मोत्सव के अवसर पर दिया गया संदेश

24 जुलाई 2026

बीज बोने से पहले की मिट्टी

श्रद्धा वह बोती है, जिसे कोई अन्य शक्ति नहीं बो सकती

प्रिय मित्रों,

कल्पना करें कि दो व्यक्ति एक ही ध्यान-कक्ष में बैठे हैं। दोनों समान प्राणाहुति प्राप्त कर रहे हैं, वही शब्द सुन रहे हैं और एक ही क्षण में अपनी आँखें बंद कर रहे हैं। ध्यान समाप्त होने पर उनमें से एक उठता है और उसके भीतर शांतिपूर्वक और स्थायी रूप से कुछ बदल चुका होता है ठीक वैसे ही जैसे किसी कम्पास की सुई पहली बार में उत्तर दिशा को ढूँढ लेती है। दूसरा व्यक्ति भी उठता है, समय देखता है और सोचता है कि बाकी सभी लोग क्या महसूस कर रहे हैं। प्राणाहुति वही है, मौन वही है और शब्द भी वही हैं फिर भी दोनों के अनुभव में एक अंतर है। वह अंतर क्या है? इस प्रश्न को अपने मन में बनाए रखें क्योंकि हम वापस इसी पर बात करेंगे।

उसी प्रकार, कल्पना करें कि पानी से भरे एक बर्तन में आलू और अंडा एक साथ उबाले जा रहे हैं। पानी वही है, आँच वही है और पकने का समय भी समान है फिर भी आलू नरम हो जाता है, जबकि अंडा सख्त हो जाता है। हममें से हर कोई अपने भीतर क्या लेकर चलता है वही निर्धारित करता है कि कोई अनुभव हमें अधिक खुला और ग्रहणशील बनाएगा या और अधिक सख्त कर देगा। यह प्रतिभा, योग्यता का प्रश्न नहीं है। यह केवल भूमि का प्रश्न है, उस मिट्टी का (आंतरिक आधार) जिसमें बीज बोया जाता है।

वह शब्द जिसका कोई अनुवाद नहीं है

पिछले संदेशों की श्रृंखला में हमने साथ मिलकर उन सात आंतरिक अवरोधों को समझा जो एक साधक और उसके प्रतीक्षारत जीवन के बीच खड़े हैं। हमने देखा कि किस प्रकार इच्छा हृदय को विभाजित करती है, जड़ता हमारी क्रियाशीलता को दबा देती है, संदेह भीतर से क्षरण करता है, अहंकार सीमाएँ खड़ी कर देता है, ईर्ष्या व्यक्ति को पंगु बना देती है, पूर्वाग्रह हमारी समझ की खिड़कियाँ बंद कर देता है और भय, जो इन सबकी जननी है, भीतर से द्वार बंद कर देता है। 'जीवन जिसे जिया नहीं गया', वाले संदेश में हमने जाना कि श्रद्धा चाबी को घुमाकर बंद द्वार के ताले को खोलती है और उसके पार हमें सबसे पहले जो मिलता है वह गंतव्य नहीं बल्कि एक विशेष प्रकार की भूमि है – एक आंतरिक आधार, एक ग्रहणशील धरातल।

प्राचीन ऋषियों ने उसे 'श्रद्धा' कहा है।

श्रद्धा का अंग्रेज़ी अनुवाद प्रायः 'फेथ' (Faith) किया जाता है लेकिन यह पूर्ण रूप से उसका अर्थ व्यक्त नहीं करता। सामान्यतः 'फेथ' का अर्थ उस बात पर विश्वास करना माना जाता है जिसे सिद्ध नहीं किया जा सकता, जबकि श्रद्धा उससे कहीं अधिक जीवंत और व्यापक है। यह भरोसा, आत्म-विश्वास, ईमानदारी, दृढ़ संकल्प, निष्ठा और आंतरिक दृढ़ता का ऐसा संगम है जो एक ही ज्योति के रूप में प्रज्वलित होता है। यह केवल किसी विचार को मन से स्वीकार कर लेना नहीं है बल्कि यह तो बुद्धि द्वारा प्रमाणों को परखने से पहले ही सम्पूर्ण अस्तित्व का अपने हृदय के सत्य की ओर उन्मुख हो जाना है।

ज्ञानीजन श्रद्धा का वर्णन शास्त्रों और गुरु में विश्वास करने के रूप में समझाते हैं और इसी के माध्यम से उस ऊँचाई को प्राप्त करते हैं जो सम्भव है। अब सारी सूक्ष्मता 'विश्वास' शब्द में छिपी हुई है – यह किसी विचार को बिना विरोध के मान लेना नहीं है। यह तो अपने समस्त अस्तित्व को उस सत्य के साथ सक्रियता से एकरूप करना है जिसे केवल सुना नहीं गया है बल्कि किसी स्तर पर अनुभव भी किया गया है।

महर्षि पतंजलि, जो आंतरिक अनुभवों के महान मानचित्रकार हैं, उन्होंने सर्वोच्च आत्म-साक्षात्कार की ओर ले जाने वाले पाँच गुणों के क्रम में 'श्रद्धा' को सबसे पहला

स्थान दिया है। वे पाँच गुण हैं श्रद्धा, वीर्य, स्मृति, समाधि और प्रज्ञा। इस क्रम पर ध्यान दें – श्रद्धा हमारी ऊर्जा या पुरुषार्थ करने की इच्छा को प्रेरित करती है, ऊर्जा हमारी स्मृति को बनाए रखती है, स्मृति परिपक्व होकर समाधि में परिणत होती है और समाधि अंततः प्रज्ञा (परम ज्ञान) के रूप में पुष्पित होती है। इस पूरी श्रृंखला की आधारशिला श्रद्धा है। यदि श्रद्धा को हटा दिया जाए तो शेष सब कुछ वैसे ही ढह जाता है जैसे भूतल के बिना कोई सीढ़ी खड़ी नहीं रह सकती।

वह आत्म-विश्वास जिसकी आपने अपेक्षा नहीं की थी

हम प्रायः श्रद्धा को ईश्वर, गुरु और अपनी साधना में विश्वास के रूप में समझते हैं और निस्संदेह श्रद्धा में ये सभी सम्मिलित हैं। आपको यह जानकर आश्चर्य हो सकता है कि श्रद्धा का आरम्भ हमारे भीतर से ही होता है। जब हममें आत्म-विश्वास नहीं होता तब हमारे भीतर श्रद्धा का अभाव होता है। जब हमें इस मार्ग पर चलने की अपनी क्षमता पर ही भरोसा नहीं होता तब मार्ग कितना भी प्रकाशमय क्यों न हो, उसका लाभ हमें नहीं मिल पाता। जब हमें यह भरोसा नहीं होता कि हमने सही मार्ग चुना है तब कृपा की कितनी ही वर्षा क्यों न हो, वह हमें आश्वस्त नहीं कर पाती। संदेह बार-बार लौटता रहेगा – इसलिए नहीं कि अनुभव अपर्याप्त है बल्कि इसलिए कि हमें अपनी ही ग्रहणशीलता पर भरोसा नहीं है।

सोचें कि इसका अर्थ क्या है। क्या आपको 'सुदृढ़ आधार का निर्माण' की वह महिला याद है, जिसने ग्यारह वर्षों तक ध्यान किया था और फिर भी पूछती रही, "क्या यह वास्तव में सच है?" उसकी साधना त्रुटिहीन थी। उसके आसपास के सभी लोगों को उसका रूपांतरण स्पष्ट दिखाई दे रहा था फिर भी वह उस पर भरोसा नहीं कर पा रही थी।

श्रद्धा का अंग्रेज़ी अनुवाद प्रायः 'फेथ' (Faith) किया जाता है लेकिन यह पूर्ण रूप से उसका अर्थ व्यक्त नहीं करता। सामान्यतः 'फेथ' का अर्थ उस बात पर विश्वास करना माना जाता है जिसे सिद्ध नहीं किया जा सकता, जबकि श्रद्धा उससे कहीं अधिक जीवंत और व्यापक है। यह भरोसा, आत्म-विश्वास, ईमानदारी, दृढ़ संकल्प, निष्ठा और आंतरिक दृढ़ता का ऐसा संगम है जो एक ही ज्योति के रूप में प्रज्वलित होता है।

क्यों? क्योंकि उसका संदेह साधना पर नहीं था; वह स्वयं अपने बारे में था। उसे अपनी इस क्षमता पर भरोसा नहीं था कि वह वास्तव में रूपांतरित हो सकती है। वह उबलते पानी में पड़े उस अंडे के समान थी, जो उसी अनुभव से और अधिक कठोर होती जा रही थी, जिसका उद्देश्य उसे नरम बनाना था। यदि श्रद्धा उपस्थित होती तो उसने इस प्रश्न को उठने से पहले ही सुलझा दिया होता – अपने संदेह से बहस करके नहीं बल्कि ऐसा सुदृढ़ आधार प्रदान करके जहाँ संदेह को प्रवेश करने के लिए कोई दरार ही नहीं मिल पाती।

यही श्रद्धा का वह आयाम है, जिसके बारे में जानने की हमें अत्यंत आवश्यकता है – आध्यात्मिकता में स्वयं पर विश्वास उतना ही मूलभूत है, जितना दिव्य इच्छा के प्रति समर्पण। ये दोनों एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं; वे तो एक ही गति है जिसे भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण से देखा जा रहा है। जब आप स्वयं पर इतना भरोसा करते हैं कि अपना नियंत्रण छोड़ सकें, तो वह समर्पण होता है। जब आप ईश्वर पर इतना भरोसा करते हैं कि यह मान सकें कि आप उसकी कृपा और ध्यान के योग्य हैं, तो वह आत्म-विश्वास है। श्रद्धा इन दोनों को एक ही हाथ में धारण करती है।

मिट्टी में क्या उगता है?

बीज यह नहीं चुनता कि वह किस मिट्टी में गिरेगा लेकिन एक साधक यह चयन कर सकता है। साधक जिस मिट्टी को तैयार करता है, वही आगे आने वाली हर बात को निर्धारित करती है। जहाँ सच में आत्म-विश्वास नहीं होता, वहाँ सच्चा प्रेम भी नहीं होता और न ही सच्चा समर्पण। जहाँ आत्म-विश्वास सच्चा होता है, वहाँ आत्मा की एक जीवंत संरचना प्रकट होती है –

श्रद्धा वह भूमि है, जिसमें प्रेम विकसित होता है।
भक्ति वह प्रेम है, जिसे अपनी दिशा मिल गई है।
समर्पण वह भक्ति है, जिसने परिणाम पर अपनी पकड़ छोड़ दी है।
लयावस्था वह है, जो तब शेष रह जाती है, जब समर्पण भी समर्पित हो चुका होता है।

आइए, इस क्रम को एक बार फिर धीरे-धीरे समझें –

श्रद्धा प्रेम में परिणत होती है।
प्रेम भक्ति में परिणत होता है।
भक्ति शरणागति में परिणत होती है।
और शरणागति अंततः लयावस्था तक पहुँचा देती है।

हर एक अवस्था अपनी पिछली अवस्था से ठीक वैसे ही स्वाभाविक रूप से विकसित होती है, जैसे एक कली फूल बनती है और एक फूल फल में परिणत होता है। जिस प्रकार आप किसी कली को बलपूर्वक फल नहीं बना सकते, उसी प्रकार इन अवस्थाओं को भी बलपूर्वक उत्पन्न नहीं किया जा सकता। आप केवल मिट्टी को तैयार कर सकते हैं और सूर्य को अपना कार्य करने दे सकते हैं।

अब, यहाँ वह सत्य है जो इस नई श्रृंखला में हमारा मुख्य विषय रहेगा – जब लयावस्था घटित होती है तब वास्तविक यात्रा आरम्भ होती है। कृपया कुछ समय मौन रहकर इस कथन पर चिंतन करें। लगभग सभी आध्यात्मिक परंपराएँ और शिक्षाएँ विलय को ही अंतिम गंतव्य के रूप में दर्शाती हैं लेकिन जो मनिषि वहाँ पहुँच चुके हैं, वे इससे भी आगे की बात करते हैं – शिखर कोई गंतव्य नहीं है, वह एक द्वार है। जिस जीवन के बारे में आपको लगता था कि आप उसकी तलाश कर रहे हैं, वह तो केवल उस जीवन की तैयारी मात्र है जो उस द्वार के पार आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। उस तैयारी का आरम्भ मिट्टी की गुणवत्ता से होता है यानी – उस आंतरिक भूमि से, जिसे हम श्रद्धा कहते हैं।

श्रद्धा वह भूमि है, जिसमें प्रेम विकसित होता है।
भक्ति वह प्रेम है, जिसे अपनी दिशा मिल गई है।
समर्पण वह भक्ति है, जिसने परिणाम पर अपनी पकड़ छोड़ दी है।
लयावस्था वह है, जो तब शेष रह जाती है, जब समर्पण भी समर्पित हो चुका होता है।

न शिथिल, न अंधी

यह एक सूक्ष्म-सी शिक्षा है जिसके भीतर शांत प्रभाव छिपा हुआ है – श्रद्धा आधी-अधूरी नहीं हो सकती। यदि आपकी श्रद्धा आपको आधी-अधूरी प्रतीत होती है तो अपने उद्देश्यों की पुनः समीक्षा करें और उन पर कार्य करें। श्रद्धा उत्साहपूर्ण और दृढ़निश्चयी होती है। वह उस दीपक की भाँति जलती है, जिसकी लौ को कोई आँधी बुझा नहीं सकती, इसलिए नहीं कि उसकी लौ प्रचण्ड है बल्कि इसलिए कि वह गहरे तेल में डूबी है।

श्रद्धा अंधी भी नहीं होती। उसका जन्म किसी ऐसे प्रत्यक्ष अनुभव से होता है जो आपके आंतरिक संसार को बदल देता है। यही बात श्रद्धा को विश्वास से अलग करती है। विश्वास कभी-कभी परिवार की विरासत की तरह प्राप्त हो जाता है, जिसे लोग बिना अधिक परखे स्वीकार कर लेते हैं। आप विश्वास इसलिए कर सकते हैं क्योंकि आपके माता-पिता विश्वास करते हैं या आपका समाज विश्वास करता है। ऐसा इसलिए भी है क्योंकि प्रश्न उठाने की अपेक्षा विश्वास कर लेना अधिक सरल लगता है लेकिन श्रद्धा इस प्रकार कार्य नहीं करती। वह प्रत्यक्ष अनुभूति पर आधारित होती है। जब आप ध्यान में बैठते हैं और स्पष्ट रूप से ऐसी उपस्थिति का अनुभव करते हैं, जिसे न विचार उत्पन्न कर सकता है और न स्मृति गढ़ सकती है, तब श्रद्धा का विकास आरम्भ होता है। आपका हृदय ही प्रमाण बन जाता है।

इसी कारण हार्टफुलनेस में ध्यान केवल एक तकनीक नहीं है; यह ऐसी प्रयोगशाला है जहाँ श्रद्धा का निर्माण और परिष्कार होता है। प्रत्येक ध्यान का अनुभव, जो किसी वास्तविक सत्य को देखने का नया परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है, आपके पैरों के नीचे की भूमि में एक नई परत जोड़ देता है। धीरे-धीरे वही भूमि इतनी दृढ़ और स्थिर हो जाती है कि जब संदेह आपके द्वार पर दस्तक देता है, जैसा कि वह हमेशा देता है – तब आपका घर नहीं डगमगाता। ऐसा नहीं कि आपने हर प्रश्न का उत्तर दे दिया है बल्कि आप ऐसे आधार पर खड़े हो चुके होते हैं, जहाँ तक प्रश्नों की पहुँच ही नहीं होती।

जीवन जिसने इसे सिद्ध कर दिखाया

आज, जब हम पूज्य चारीजी महाराज के जन्म के निन्यानवे वर्ष पूरे होने का उत्सव मना रहे हैं, तब थोड़ा रुककर इस पूरे संदेश में वर्णित बातों पर विचार करना उचित होगा। वे विज्ञान में प्रशिक्षित और उद्योग-जगत के अनुभवी व्यक्ति थे। उनका मस्तिष्क सूक्ष्म-निरीक्षण करने की क्षमता रखता था। जब उन्हें अपने सद्गुरु का सान्निध्य प्राप्त हुआ तब उनके द्वारा अर्पित की गई श्रद्धा अंधी नहीं थी, क्योंकि उन्होंने प्रतिदिन अपने ही हृदय की प्रयोगशाला में उसे परखा था। वह कभी आधी-अधूरी भी नहीं थी, क्योंकि उसने उनके संपूर्ण जीवन को अपने भीतर समाहित कर लिया था। उनका हृदय एक भली-भाँति तैयार किया हुआ खेत था। जब उस पर प्राणाहुति की वर्षा हुई तब उसकी फसल ने संसारभर के साधकों का पोषण किया और आज भी हमें पोषित कर रही है। उन्होंने हमसे यह नहीं कहा कि हम उनकी श्रद्धा की प्रशंसा करें। उन्होंने हमें अपनी श्रद्धा विकसित करने के लिए प्रेरित किया। उनके प्रति हम जो सर्वोत्तम श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं, वह है एक ऐसा हृदय जो पूर्णतः तैयार, ग्रहणशील और सजग हो।

ध्यान कक्ष में बैठे वे दो व्यक्ति

आइए, अब हम उन दो लोगों के पास लौटें जो ध्यान कर रहे थे और उस प्रश्न का उत्तर खोजें जिससे हमने आरम्भ किया था। दोनों में अंतर क्या था? मिट्टी का। एक हृदय पहले से तैयार था – पूर्णतः नहीं, संपूर्ण रूप से भी नहीं लेकिन उसके भीतर एक तत्परता थी, एक शांत दृढ़ विश्वास था कि कुछ वास्तविक घटित हो सकता है और ग्रहण करने की अपनी क्षमता पर भरोसा था। वह तत्परता न तो कोई विशेष प्रतिभा थी और न ही भाग्य; वह श्रद्धा थी। उबलते पानी में रखे आलू की भाँति वह हृदय प्राणाहुति की ऊष्मा में नरम होता गया और जो कुछ उसे प्रदान किया जा रहा था, उसके प्रति और अधिक खुलता गया। यह एक ऐसी गुणवत्ता है, जिसे कोई भी व्यक्ति विकसित कर सकता है, यदि वह उसे विकसित करने का चुनाव करे।

दूसरा हृदय बंजर नहीं था। आइए, इस बात को स्पष्ट रूप से समझ लें कि कोई भी हृदय कभी बंजर नहीं होता। वह केवल अभी तैयार नहीं था, शायद भटका हुआ था, शायद सतर्क था या फिर किसी पुराने दुःख और निराशा की छाया अपने भीतर लिए हुए था, जो धीमे से फुसफुसाती थी, 'बहुत अधिक आशा मत करो।' क्या यह फुसफुसाहट आपको परिचित लगती है? यह उसी भय की अंतिम प्रतिध्वनि है, जिसे हमने पिछले आठ संदेशों में धीरे-धीरे विलीन करने का प्रयास किया था। इसका उपाय भी वही है जो पहले था, कोई बड़ा या असाधारण कार्य नहीं, बल्कि एक छोटा-सा अपरिवर्तनीय कदम। इसलिए कल फिर से ध्यान में बैठें, पर इस बार थोड़ा-सा अधिक खुलापन लेकर। अपने हृदय को थोड़ा कम रक्षात्मक रहने दें। बस वह उतना-सा अंश ही पर्याप्त होगा। श्रद्धा एक ही बार में पूर्ण रूप से नहीं उतरती। वह उसी प्रकार विकसित होती है, जैसे मिट्टी धीरे-धीरे समृद्ध बनती जाती है, ऋतु-दर-ऋतु, ध्यान-दर-ध्यान और विश्वासपूर्ण छोटे-छोटे कार्यों के माध्यम से।

हम सभी छोटे बच्चों के समान हैं, जिन्हें आश्वासन देना पड़ता है। हम अपने भीतर ऐसे गहरे भय लिए हुए हैं जो युगों से चले आ रहे हैं। श्रद्धा वह आश्वासन है जो आत्मा स्वयं को देती है। यह वह क्षण है, जब बालक अनुमति के लिए बाहर देखना बंद कर देता है और यह पाता है कि उसके अपने पैरों के नीचे की भूमि तो सदा से दृढ़ और स्थिर थी, हमेशा वहीं उपस्थित थी, उसे केवल उसके भरोसे की प्रतीक्षा थी।

मिट्टी को तैयार करें और तब आप पाएँगे कि बीज को पहले से ही ज्ञात है कि उसे क्या बनना है।

प्रेम और प्रार्थनाओं के साथ,
कमलेश

पूज्यश्री चारीजी महाराज
के 99वें जन्मोत्सव के अवसर पर दिया गया संदेश
24 जुलाई 2026

अधिक गहराई में जाने के लिए
वहाँ बहुत कुछ है जो आपकी प्रतीक्षा कर रहा है

हार्टफुलनेस ऐप

शुरुआत के लिए एक शांत स्थान
अपना अभ्यास अपने साथ रखें — निःशुल्क ऐप डाउनलोड करें और किसी व्यक्तिगत प्रशिक्षक से कभी भी जुड़ें।

निःशुल्क डाउनलोड। दैनिक अभ्यास। प्रशिक्षक सदैव उपलब्ध।

Heartfulnessapp.org

मास्टरक्लास

घर बैठें और गहराई में जाएँ
तीन निःशुल्क वीडियो सत्रों के माध्यम से दाजी के साथ रिलैक्सेशन, ध्यान, सफ़ाई और प्रार्थना सीखें।

निःशुल्क वीडियो। दाजी से सीखें। 3 सत्र।

Heartfulness.org/global/masterclass

रिट्रीट

केवल अपने लिए समय
कोलाहल से दूर होकर एक शांतिपूर्ण सप्ताहांत बिताएँ, जो धीरे-धीरे आपके अभ्यास को गहन बनाता है।

शांत वातावरण। गहन अभ्यास। सप्ताहांत प्रवास ।

Heartfulness.org/global/retreat

हार्टस्पॉट्स

अपने निकट एक केंद्र खोजें
आपका निकटतम ध्यान केंद्र आपकी कल्पना से भी अधिक समीप है और वह भी निःशुल्क।

6000+ केंद्र। हार्टफुल समुदाय। आप कभी भी वहाँ जा सकते हैं।

Heartspots.heartfulness.org

निःशुल्क ऐप डाउनलोड करने के लिए स्कैन करें। जब भी आवश्यकता हो, यह आपके साथ है। एक मार्गदर्शित सत्र से प्रारंभ करें और अभ्यास को अपने भीतर स्वाभाविक रूप से विकसित होने दें। अंतर की यात्रा एक शांत क्षण से आरंभ होती है।

heartfulness
purity weaves destiny